P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

व्यवसायिक संरचना का बदलता प्रतिरूप – जनपद सहारनपुर का एक भौगोलिक अध्ययन

नरेन्द्र कुमार
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
डी0बी0एस0(पी0जी0)कॉलेज,
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

विजय बहुगुणा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
डी0बी0एस0(पी0जी0)कॉलेज,
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन वर्तमान समय की आवश्यकता है। इस व्यवसायिक संरचना को परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ने किया है। व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन के परिणाम स्वरूप कार्यशील जनसंख्या में लिंग असमानता की समस्या समाप्त हुई है। प्राथमिक क्रिया–कलापों में संलग्न जनसंख्या द्वितीयक एवं तृतीयक क्रिया–कलापों की ओर तीव्र गति से स्थानांतरित हुई है। ग्रामीण क्षेत्र में द्वितीयक एवं तृतीयक क्रिया–कलापों के अभाव ने ग्रामीण जनसंख्या को रोजगार की तलाश में नगरों की ओर पलायन करने पर मजबूर किया है। यातायात एवं परिवहन सुविधाओं ने व्यवसायिक संरचना को तीव्र गति से परिवर्तित किया है। व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन के परिणाम स्वरूप ही प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है, इसके साथ ही कृषि पर निर्भरता कम हुई है। द्वितीयक एवं तृतीयक क्रिया–कलापों में संलग्न जनसंख्या का न केवल खान–पान व रहन–सहन का स्तर उच्च होता है, बल्कि जीवन प्रत्याशा भी उच्च होती है, जिसका प्रमुख कारण प्रति व्यक्ति आय का उच्च होना है।

मुख्य शब्द : व्यवसायिक संरचना, परिवर्तन, प्रति व्यक्ति आय, कार्यशील जनसंख्या, विकास, ग्रामीण जनसंख्या।

प्रस्तावना

तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या ने प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव को बढ़ा दिया है, जिस कारण से व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन होना स्वभाविक है। इसके साथ ही शिक्षा में वृद्धि ने न केवल प्राथमिक क्रिया–कलापों में संलग्न जनसंख्या के अत्यधिक दबाव को कम करने का कार्य किया है, बल्कि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि तथा बेरोजगारी की दर को कम करने का भी प्रयास किया है। तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण अधिकांश जनसंख्या कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित क्रिया–कलापों को वरीयता प्रदान करती है। कृषि में रोजगार की अनिश्चितता तथा अनियमित्ता होने के कारण गरीबी, बेरोजगारी तथा न्यूनतम मजदूरी दर के कारण व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक नहीं हो पायी है। कृषि आधारित लघु व कुटीर उद्योग–धन्धे वर्तमान समय में तीव्र गति से बन्द होते जा रहे हैं, जो ग्रामीण जनसंख्या के लिए बेरोजगारी का कारण बनते जा रहे हैं।

समन्वित ग्रामीण विकास हेतु कृषि ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को विकसित करती है। ग्रामीण स्तर पर यातायात एवं परिवहन सुविधाओं के अल्पविकसित होने के कारण अधिकांश व्यक्ति कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित क्रिया–कलापों में संलग्न है। चिकित्सकीय सुविधाओं में विकास के परिणाम स्वरूप जीवन–प्रत्याशा में वृद्धि हुई है, जिससे आश्रित जनसंख्या में वृद्धि हुई है। व्यवसायिक संरचना में तीव्र गति से परिवर्तन नगर के समीप अवस्थित ग्रामीण क्षेत्र, नगर व गाँव के मध्य अवस्थित 'उपान्त प्रदेश' तथा मुख्य सड़क मार्ग के समीप अवस्थित गाँवों में हुआ है।

साहित्यावलोकन

सामाजिक एवं आर्थिक विकास, ग्रामीण विकास, कृषि विकास तथा व्यवसायिक संरचना के परिवर्तन से सम्बन्धित पूर्व में अनेक शोध कार्य स्वदेशी एवं विदेशी विद्वानों द्वारा किये गये हैं। सामाजिक संरचना तथा आर्थिक संरचना में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है, जिसका मुख्य कारण शिक्षा में वृद्धि, यातायात एवं परिवहन सुविधाओं का विकास, कृषि में मशीनीकरण का प्रयोग तथा चिकित्सकीय सुविधाओं का विकसित होना इत्यादि प्रमुख है। पूर्व में किये गये शोध कार्यों को कालक्रमानुसार निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया गया है–

चौधरी (2001)– इन्होंने ग्रामीण स्तर पर विषमता दूर करने के लिए सतत् एवं सन्तुलित विकास तथा प्रादेशिक नियोजन पर अध्ययन किया।

मिश्रा (2002)– इन्होंने अति पिछड़े व्यक्तियों के विकास हेतु संगठन का निर्माण ग्रामीण स्तर पर करने का सुझाव अपने अध्ययन में दिया।

रामाकृष्णन (2003)– इन्होंने अपने अध्ययन में महिला श्रमिकों के विकास का मूल आधार स्वयं सहायता समूह को बताया।

गुप्ता (2003)– इन्होंने 'सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा हेतु महिला संगठन' पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसमें बताया कि महिला श्रमिकों की सुरक्षा हेतु महिला संगठन अति आवश्यक है।

जोहन (2004)– इन्होंने केरल के हस्तशिल्प श्रमिकों का अध्ययन किया, जिसमें उन्होंने संगठित एवं असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर भिन्नता को दर्शाया। जिसका प्रमुख कारण शिक्षा तथा तकनीकी ज्ञान है।

दत्त (2007)– इन्होंने कृषि क्षेत्र एवं गैर कृषि क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों का अध्ययन किया, जिसमें बताया कि 92% श्रमिक गैर कृषि क्षेत्र में कार्य करते हैं, जबकि 8% श्रमिक कृषि क्षेत्र में कार्य करते हैं, जिसमें कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों में गरीबी की दर अधिक है।

अग्रवाल (2009)– इन्होंने अपने अध्ययन में बताया कि श्रमिक संरचना पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव महत्वपूर्ण होता है। सुरक्षा, आय तथा सुविधाऐं श्रमिक को प्रभावित करती है, जिससे व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन होना स्वभाविक है।

डोलास (2010)– इन्होंने अपना अध्ययन शोलापुर जनपद के बीड़ी बनवाने वाले श्रमिकों पर किया। यहां पर कृषि क्षेत्र के पिछड़े होने के कारण श्रमिक कम वेतन पर कार्य करने को तत्पर रहते थे। इसके साथ ही श्रमिक कृषि कार्यों के स्थान पर द्वितीयक श्रेणी के क्रिया–कलापों को करना पसन्द करते हैं।

मोहन राज (2013)– इन्होंने अपने शोध में बताया कि 85% श्रमिक असंगठित क्षेत्र में कार्य करते हैं। इसमें दैनिक मजूदरी वाले श्रमिक अधिक मात्रा में कार्य करते हैं। असंगठित एवं संगठित क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों के वेतन में बहुत ज्यादा अन्तर के कारण को इन्होंने अपने शोध में प्रस्तुत किया।

बी०वी० (2014)– इन्होंने अपना अध्ययन सूती वस्त्र उद्योग में काम करने वाले महिला श्रमिकों पर किया। इन्होंने बताया कि इन महिलाओं ने तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हो जाने पर कम वेतन पर कार्य करने से मना कर दिया।

चित्रा (2015)– अपने इस शोध में लेखक ने विनिर्माण क्षेत्र में कार्य करने वाली तिरूचिनापल्ली की महिलाओं की समस्याओं का मूल्यांकन किया। जिसमें इन्होंने इन महिला श्रमिकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन किया। इन महिला श्रमिकों की व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का मूल्यांकन किया।

कुमार एवं पंवार (2016)– इन्होंने अपने शोध पत्र में मौसमी श्रमिकों की कार्य क्षमता का अध्ययन किया।

कुमार (2018)– इन्होंने ईंट उद्योग में संलग्न श्रमिकों की मासिक आय, वर्ग, साक्षरता, लिंग तथा पारिवारिक स्तर का अध्ययन किया। इसके साथ ही ग्रामीण रोजगार में ईंट उद्योग की भूमिका को स्पष्ट किया।

उद्देश्य एवं महत्व

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में विद्यमान कार्यशील विषमता, आश्रित जनसंख्या, प्राथमिक क्रिया–कलापों पर श्रमिकों की निर्भरता, महिला श्रमिकों की कम सहभागिता तथा ग्रामीण आर्थिक अवसंरचना का मूल्यांकन करना है। प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. कार्यशील जनसंख्या की संरचना का वर्गीकरण, स्तर एवं प्रतिरूप को ज्ञात करना।
2. व्यवसायिक संरचना को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों को ज्ञात करना।
3. कार्यशील जनसंख्या तथा आश्रित जनसंख्या के अनुपात में ज्ञात करना।

प्रस्तुत शोध का महत्व अध्ययन क्षेत्र की व्यवसायिक संरचना, आश्रित जनसंख्या, कार्यशील जनसंख्या, महिला कार्यशील जनसंख्या के अनुपात तथा प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक क्रिया–कलापों में संलग्न जनसंख्या के अनुपात को ज्ञात करने में मदद करेगा। इसके साथ ही गरीबी, बेरोजगारी तथा पलायन जैसी समस्याऐं ग्रामीण क्षेत्र में व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन के कारण उत्पन्न हो रही है, को समझने तथा उनके निदान में मदद करेगा।

आँकड़ों का संग्रह एवं विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े अध्ययन क्षेत्र से सैम्पल सर्वे के आधार पर प्रश्नावली/अनुसूची के माध्यम से व्यक्तिगत साक्षात्कार विधि द्वारा एकत्र किये गये हैं। जबकि द्वितीयक आँकड़े जनपद सहारनपुर की सांख्यिकी पत्रिका से प्राप्त किये गये हैं। सांख्यिकी विधियों के द्वारा समस्या के स्तर तथा प्रतिरूप को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

शोध परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने हेतु निम्न शोध परिकल्पनाओं का चयन किया गया है–

1. साक्षरता दर में वृद्धि के कारण व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन होता है।
2. यातायात एवं परिवहन सुविधाऐं व्यवसायिक संरचना को प्रभावित करती है।
3. उद्योग–धन्धों का विकास ग्रामीण आर्थिक संरचना को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्र का चयन किया गया है। सहारनपुर जनपद ऊपरी गंगा–यमुना दोआब के ऊपरी भाग में अवस्थित है। इस जनपद का अक्षांशीय विस्तार

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

29º45' उत्तर से 30º25' उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार 77º15' पूर्व से 78º06' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 3689 वर्ग किमी० है। इस जनपद की उत्तरी सीमा पर हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी सीमा पर हरियाणा, उत्तर–पूर्वी सीमा पर उत्तराखण्ड पूर्वी सीमा पर जनपद बिजनौर तथा दक्षिणी सीमा पर मुजफ्फरनगर जनपद अवस्थित है। यमुना नदी पश्चिमी सीमा पर अवस्थित है, जो सहारनपुर व हरियाणा के मध्य प्राकृतिक सीमा रेखा का निर्माण करती है। गंगा नदी पूर्व में बिजनौर जनपद से इसके साथ प्राकृतिक सीमा रेखा का निर्माण करती है। यह गंगा व यमुना नदियों के मध्य अवस्थित उत्तर–प्रदेश राज्य का उत्तरी सीमावर्ती जनपद है। यह शिवालिक पर्वतमाला के पदीय भाग में अवस्थित है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2011 के अनुसार 5 तहसील (बेहट, सहारनपुर, नकुड़, देवबन्द तथा रामपुर मनिहारन) तथा 11 विकास खण्ड व 1243 गाँव सम्मिलित है। प्रशासनिक दृष्टि से इसका मुख्यालय सहारनपुर नगर में अवस्थित है।

जनसंख्या का वितरण (2011)

अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में ग्रामीण क्षेत्र में कुल जनसंख्या 24.0 लाख है, जिसमें 12.70 लाख पुरुष तथा 11.30 लाख महिलाऐं सम्मिलित हैं। यहां पर सबसे अधिक जनसंख्या 2.95 लाख विकास खण्ड मुजफ्फराबाद तथा सबसे कम 1.55 लाख विकास खण्ड ननौता में है। वर्ष 2011 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या के वितरण को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–1

जनपद सहारनपुर में जनसंख्या का वितरण, वर्ष 2011

क्र०सं०	विकास खण्ड	कुल जनसंख्या	प्रतिशत	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
1.	सदौली कद्दीम	208999	8.71	110315	8.68	98684	8.73
2.	मुजफ्फराबाद	295326	12.30	155513	12.24	139813	12.37
3.	पुवारकां	229482	9.56	120657	9.50	108825	9.63
4.	बलिया खेड़ी	210818	8.78	111826	8.80	98992	8.76
5.	सरसावां	258323	10.76	136294	10.73	122049	10.80
6.	नकुड़	205120	8.54	108814	8.57	96306	8.52
7.	गंगोह	267881	11.16	141883	11.17	125998	11.15
8.	रामपुर मनिहारन	158042	6.58	84023	6.61	74019	6.54
9.	नांगल	208498	8.68	110735	8.72	97763	8.65
10.	ननौता	155244	6.47	82233	6.47	73011	6.45
11.	देवबन्द	203073	8.46	108133	8.51	94940	8.40
योग जनपद		**2400806**	**100**	**1270406**	**100**	**1130400**	**100**

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद सहारनपुर, वर्ष 2011

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक जनसंख्या 12.30% विकास खण्ड मुजफ्फराबाद तथा सबसे कम 6.47% ननौता विकास खण्ड में है। अध्ययन क्षेत्र में 52.92% पुरुष तथा 47.08% महिला जनसंख्या है। यहां पर 34.22% जनसंख्या विकास खण्ड मुजफ्फराबाद, सरसावां तथा गंगोह में निवास करती है। मुजफ्फराबाद विकास खण्ड में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या 0.13%, पुवारकां में 0.13% तथा सरसावां में 0.07% अधिक है।

आयु संरचना

किसी भी जनसंख्या की आयु–संरचना विभिन्न जनांकिकी तथ्यों के साथ ही अनेक सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं को भी प्रभावित करती है। किसी क्षेत्र या देश की जनसंख्या की आयु संरचना उसकी जनसंख्या की जन्म दर, मृत्यु दर और स्थानान्तरण की प्रवृत्तियों को स्पष्ट करती है। इसी के आधार पर कार्यशील जनसंख्या तथा आश्रित जनसंख्या को भी ज्ञात किया जाता है। आयु–संरचना सम्बन्धी आँकड़ों का भौगोलिक अध्ययन करने से क्षेत्रीय सामाजिक–आर्थिक प्रतिरूपों के महत्वपूर्ण आधार पक्ष जनसंख्या के योगदान का विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर की जनसंख्या की आयु–संरचना को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–2

जनपद सहारनपुर में जनसंख्या की आयु संरचना, वर्ष 1991 व 2011

आयु समूह	जनसंख्या (1991)			जनसंख्या (2011)		
	कुल	स्त्री	पुरुष	कुल	स्त्री	पुरुष
0 - 4	255340	122050	133290	279966	131176	148790
5 -9	240055	110993	129062	282030	148285	133745
10 -14	214230	96400	11730	297126	136470	160656
15 - 19	170743	71891	98852	218224	95946	122278
20 - 24	152393	72830	79563	170470	78367	92103
25 - 29	127950	60470	67480	152339	72782	79557

30 – 34	106314	50989	55325	140522	70545	69977
35 – 39	90294	41088	49206	127583	59414	68169
40 – 44	78159	35689	42470	98186	45345	52841
45 – 49	65889	31519	34370	79363	37055	42308
50 – 54	56740	24030	32710	61809	26741	35068
55 – 59	39670	20410	19260	47341	24469	22872
> 60	121600	49410	72190	145056	65253	79803

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद सहारनपुर, वर्ष 1991 व 2011

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में ग्रामीण जनसंख्या की आयु संरचना को दर्शाया गया है, जिसमें वर्ष 1991 में 0–14 आयु वर्ग की जनसंख्या 41.27%, 15–59 आयु वर्ग की जनसंख्या 51.65% तथा 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की जनसंख्या 7.08% थी। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि वर्ष 1991 में कार्यशील जनसंख्या 51.65% तथा आश्रित जनसंख्या 48.35% थी। वर्ष 2011 के अनुसार 0–14 आयु वर्ग की जनसंख्या 40.91%, 15–59 आयु वर्ग की जनसंख्या 52.18% तथा 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की जनसंख्या 6.91% है। अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर की जनसंख्या में हुए आयु–संरचना के परिवर्तन को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–3
जनपद सहारनपुर में जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन
वर्ष 1991 व 2011

आयु वर्ग	जनसंख्या (प्रतिशत में) 1991			जनसंख्या (प्रतिशत में) 2011			आयु संरचना में परिवर्तन 1991–2011		
	कुल	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला
0 –14	41.27	40.81	41.81	40.91	40.0	41.94	–0.36	–0.81	0.13
15 – 59	51.65	51.44	51.92	52.18	52.80	51.48	0.53	1.36	–0.44
> 60	7.08	7.75	6.27	6.91	7.20	6.58	–0.17	–0.55	0.31

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद सहारनपुर, वर्ष 1991 व 2011

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में वर्ष 1991–2011 की अवधि में जनसंख्या की आयु–संरचना में परिवर्तन हुआ है, जिसमें 0–14 आयु वर्ग की कुल जनसंख्या में –0.36% तथा पुरुष जनसंख्या में –0.81% की कमी अंकित की गयी है; जबकि महिला जनसंख्या में 0.13% की वृद्धि हुई है। 0–14 आयु वर्ग की जनसंख्या में महिला जनसंख्या में वृद्धि होने का प्रमुख कारण महिला साक्षरता में वृद्धि, लिंग चयन दण्डनेय अपराध, सीमित परिवार तथा मृत्यु दर का घट जाना इत्यादि प्रमुख है। वर्ष 1991–2011 की अवधि में 15–59 आयु वर्ग की जनसंख्या में कुल 0.53% तथा पुरुष जनसंख्या में 1.36% की वृद्धि हुई है, जबकि महिला जनसंख्या में –0.44% की कमी अंकित की गयी है। इस आयु वर्ग में महिला जनसंख्या कम होने का प्रमुख कारण महिला अपराधों में वृद्धि होना है। 60 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग की कुल जनसंख्या में –0.17% तथा पुरुष जनसंख्या में –0.55% की कमी अंकित की गयी है, जबकि महिला जनसंख्या में 0.31% की वृद्धि हुई है, जिसका प्रमुख कारण महिला जीवन प्रत्याशा का उच्च होना है।

जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना (1991–2011)

व्यवसायिक संरचना के अन्तर्गत कुल जनसंख्या में कार्यशील जनसंख्या के विभिन्न कार्यों में संलग्नता का अध्ययन किया जाता है। व्यवसायिक संरचना के द्वारा किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के प्रकार, प्रवृत्ति, आर्थिक विकास के स्तर इत्यादि का अध्ययन किया जाता है, क्योंकि किसी भी देश में क्षेत्रीय आधार पर विभिन्न भौतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों के कारण व्यवसायगत विविधता मिलती है। अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर की व्यवसायिक संरचना को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–4
जनपद सहारनपुर की व्यवसायिक संरचना का वर्गीकरण
वर्ष 1991–2011

क्र०सं०	आर्थिक क्रिया–कलाप	व्यवसायिक जनसंख्या			परिवर्तन 1991–2011
		1991	2001	2011	
1.	कृषक	207847 (44.76%)	204075 (34.25%)	203383 (28.31%)	16.45%
2.	कृषि श्रमिक	195582 (42.12%)	137344 (23.05%)	196757 (27.39%)	14.73%
3.	पारिवारिक श्रमिक	7839 (1.69%)	17373 (2.91%)	12888 (1.79%)	0.10%

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

4.	अन्य कर्मकार	38546 (8.30%)	132540 (22.24%)	191893 (23.933%)	15.63%
5.	कुल मुख्य कर्मकार	449814 (96.87%)	491332 (82.46%)	604921 (84.22%)	12.65%
6.	सीमान्त कर्मकार	14519 (3.13%)	104507 (17.54%)	113375 (15.78%)	12.65%
7.	कुल कर्मकार	464333 (100%)	595839 (100%)	718296 (100%)	–

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद सहारनपुर, वर्ष 1991, 2001 व 2011

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में वर्ष 1991 में कुल कर्मकारों में 44.76% कृषक थे, जो वर्ष 2001 में 34.25% तथा 2011 में घटकर 28.31% रह गये हैं। इस अवधि में कृषकों की संख्या में 16.45% की कमी अंकित की गयी है। वर्ष 1991 में कृषि श्रमिक 42.12%, 2001 में 23.05% तथा 2011 में घटकर 27.39% रह गये हैं। इस अवधि में कृषि श्रमिकों में 14.73% की कमी अंकित की गयी है। वर्ष 1991 में पारिवारिक श्रमिक 1.69%, 2001 में 2.91% तथा 2011 में बढ़कर 1.79% हो गये हैं। 1991–2011 की अवधि में पारिवारिक श्रमिकों की संख्या में 0.10% की वृद्धि हुई है। वर्ष 1991 में अन्य कर्मकार 8.30% थे, जो वर्ष 2001 में 22.24% तथा 2011 में बढ़कर 23.93% हो गये हैं। इस अवधि में कर्मकारों की संख्या में 15.63% की वृद्धि हुई है। वर्ष 1991 में कुल मुख्य कर्मकार 96.87% थे, जो वर्ष 2001 में घटकर 82.46% तथा 2011 में 84.22% रह गये हैं। इस अवधि में मुख्य कर्मकारों की संख्या में 12.65% की कमी आयी है। वर्ष 1991 में यहां पर सीमान्त कर्मकार 3.13% थे, जो वर्ष 2001 में 17.54% तथा 2011 में बढ़कर 15.78% हो गये हैं।

ग्राफ सं०–1

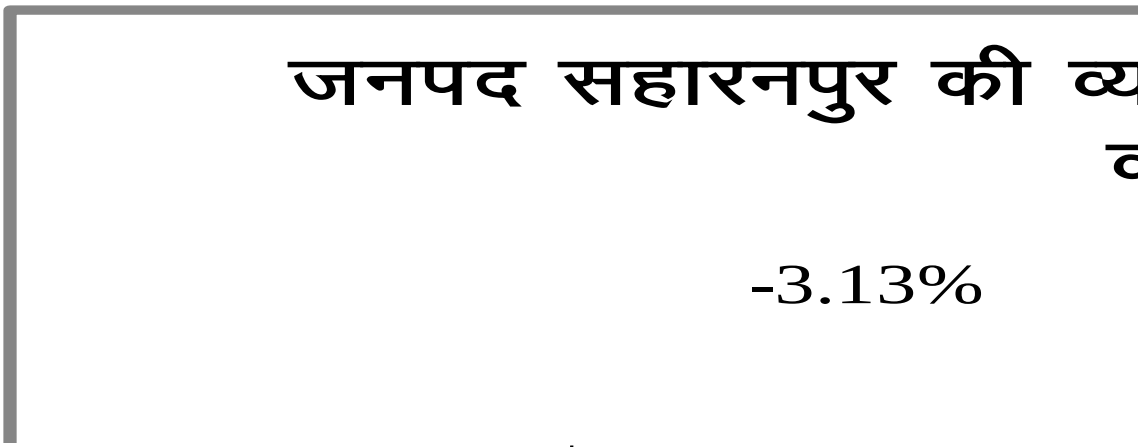

ग्राफ सं०–2

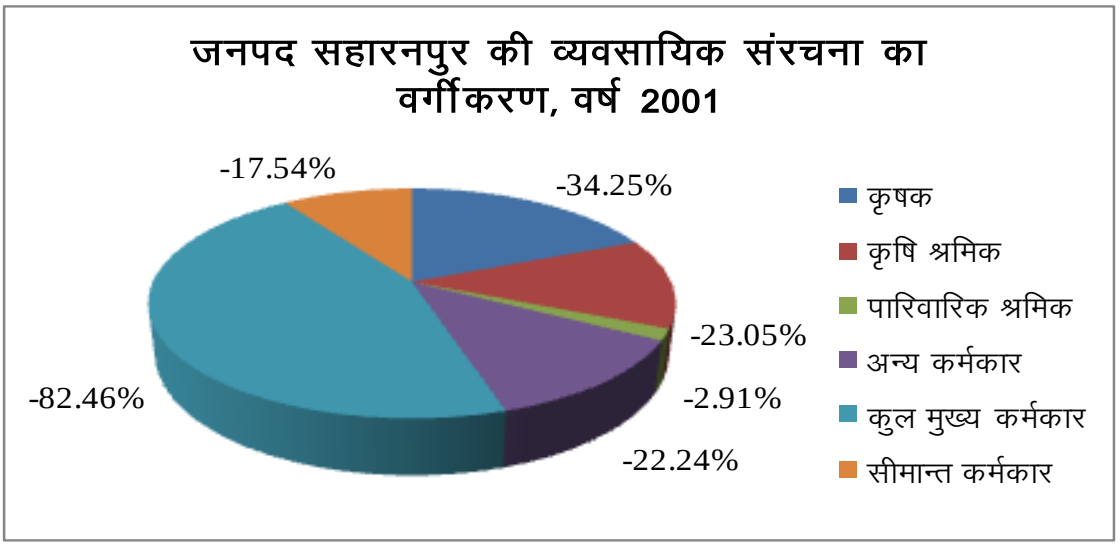

ग्राफ सं०–3

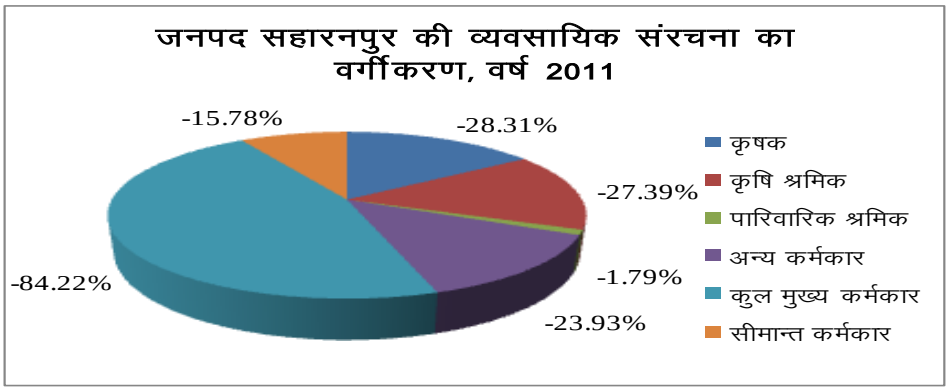

उक्त आँकड़ों के आधार पर स्पष्ट होता है, कि अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन हुआ है, जो साक्षरता में वृद्धि, यातायात एवं परिवहन साधनों का विकास, उद्योग–धन्धों का विकास तथा कृषि में मशीनीकरण का प्रयोग तथा द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र के विकसित होने का परिणाम है।

व्यवसायिक वर्गीकरण

व्यवसायिक वर्गीकरण से तात्पर्य कार्यशील जनसंख्या का प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक श्रेणी के क्रिया–कलापों में भागीदारी से है। इनमें श्रमिक कृषि, पशुपालन, मतस्यन, उद्योग–धन्धों, व्यापार एवं वाणिज्य तथा सेवाओं में अपना कार्य करते हैं। व्यवसायिक वर्गीकरण के आधार पर श्रमिकों को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–5

जनपद सहारनपुर में कार्यशील जनसंख्या का व्यवसायिक वर्गीकरण, वर्ष 2019

क्र० सं०	व्यवसायिक वर्गीकरण	कार्यशील जनसंख्या (प्रतिशत में)		
		कुल	पुरुष	महिला
1.	प्राथमिक क्रिया–कलाप	57.50%	61.48%	50.74%
2.	द्वितीयक क्रिया–कलाप	31.80%	37.65%	22.65%
3.	तृतीयक क्रिया–कलाप	10.70%	15.37%	11.45%

स्रोत– शोधार्थी द्वारा किये गये सर्वेक्षित आँकड़ों की गणना पर आधारित।

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में सर्वेक्षण करने से ज्ञात होता है कि यहां पर प्राथमिक क्रिया–कलापों में 57.50% व्यक्ति कृषि तथा पशुपालन में संलग्न है, जिनमें 61.48% पुरुष तथा 50.74% महिलाऐं सम्मिलित है। द्वितीयक क्रिया–कलापों में कुल 31.80% व्यक्ति कार्यरत है, जिनमें 37.65% पुरुष तथा 22.65% महिलाऐं सम्मिलित हैं। तृतीयक क्रिया–कलापों में 10.70% व्यक्ति संलग्न है, जिनमें 15.37% पुरुष तथा 11.45% महिलाऐं सम्मिलित हैं। इन क्रिया–कलापों के अन्तर्गत सेवाऐं सम्मिलित हैं।

ग्राफ सं०–4

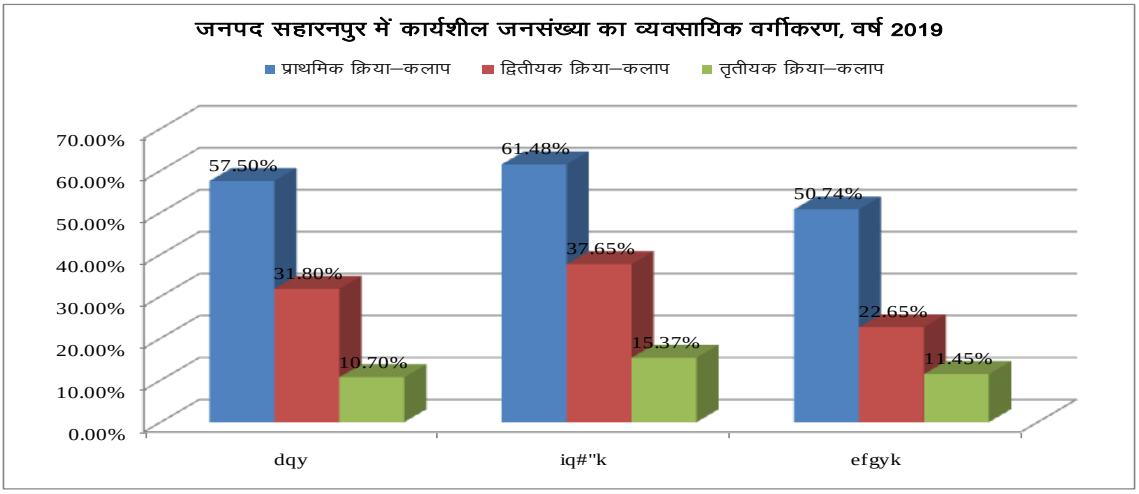

व्यवसायिक संरचना परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में व्यवसायिक संरचना को परिवर्तित करने में शिक्षा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके कारण व्यवसायिक संरचना तीव्र गति से परिवर्तित हुई है। यहां पर वर्ष 1991 से 2011 की अवधि में साक्षरता में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है। इसी अवधि में द्वितीयक एवं तृतीयक क्रिया–कलापों में श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई है। अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर की साक्षरता में हुए परिवर्तन को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी–6

जनपद सहारनपुर में साक्षरता में वृद्धि (प्रतिशत में), वर्ष 1991 व 2011

वर्ष	साक्षरता (प्रतिशत में)		
	कुल	पुरुष	महिला
1991	36.01	49.40	19.91
2001	58.72	69.96	45.66
2011	68.74	77.90	58.46

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिकाएं जनपद सहारनपुर, वर्ष 1991 – 2001 व 2011

उपरोक्त सारणी के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर में 1991 में कुल साक्षरता 36.01% थी, जो वर्ष 2001 में 58.72% तथा 2011 में बढ़कर 68.74% हो गयी है। वर्ष 1991–2011 की अवधि में कुल साक्षरता में 32.73% की वृद्धि हुई है। यहां पर 1991 में पुरुष साक्षरता 49.40% थी, जो वर्ष 2001 में 69.96% तथा 2011 में बढ़कर 77.90% हो गयी है। इस अवधि में पुरुष साक्षरता में 28.50% की वृद्धि हुई है। यहां पर महिला साक्षरता वर्ष 1991 में 19.91% थी, जो वर्ष 2001 में 45.66% तथा 2011 में 58.46% हो गयी है। इस अवधि में महिला साक्षरता में 38.55% की वृद्धि हुई है। इस प्रकार उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है, जिसने व्यवसायिक संरचना के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षित होने के पश्चात व्यक्तियों ने प्राथमिक क्रिया–कलापों के स्थान पर द्वितीयक एवं तृतीयक श्रेणी के क्रिया–कलापों को करना पसन्द किया। इसी कारण इन दोनों क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या का स्थानान्तरण हुआ है।

निष्कर्ष

व्यवसायिक संरचना का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वर्ष 1991–2011 की अवधि में अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर की व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन साक्षरता, परिवहन सुविधा, कृषि में मशीनीकरण का उपयोग तथा उद्योग–धन्धों के विकसित होने के परिणाम स्वरूप हुआ है। कृषि क्षेत्र में रोजगार की अनिश्चितता तथा अनिमित्तता ने प्राथमिक क्षेत्र की जनसंख्या को द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में परिवर्तित करने पर मजबूर कर दिया। इसको गति शिक्षा ने प्रदान की है। चिकित्सकीय सुविधाओं के विकसित होने के कारण आश्रित जनसंख्या में वृद्धि हुई है। कार्यशील जनसंख्या में द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। नगरों के समीप अवस्थित गाँवों तथा सड़कों के किनारे अवस्थित गाँवों में न केवल कार्यशील जनसंख्या में वृद्धि हुई है, बल्कि कृषि पर से अतिरिक्त जनसंख्या का दबाव भी कम हुआ है। इसके साथ ही प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई है।

वर्ष 1991 में कृषक 44.76% थे, जो वर्ष 2011 में घटकर 28.31% रह गये हैं। कृषि श्रमिक जो वर्ष 1991 में 42.12% थे, जो वर्ष 2011 में घटकर 27.39% रह गये हैं। पारिवारिक श्रमिकों की संख्या में इस अवधि में 0.10% की वृद्धि हुई है। वर्ष 1991 में अन्य कर्मकार 8. 30% थे, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 23.93% हो गये है। इस प्रकार कार्यशील जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन होना दिखलाई पड़ता है।

सुझाव

1. द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र को विकसित कर प्राथमिक क्षेत्र पर से जनसंख्या के दबाव को कम किया जा सकता है।
2. ग्रामीण क्षेत्र को विकसित करने हेतु कृषि आधारित उद्योग–धन्धों का विकास किया जाना चाहिए, जिससे द्वितीयक क्षेत्र में रोजगार के अवसर ग्रामीण क्षेत्र में प्राप्त हो सकें। जिससे गाँव से नगर को प्रवास को नियंत्रित किया जा सके।
3. शिक्षा में वृद्धि के साथ–साथ तकनीकी शिक्षा को वरीयता प्रदान की जाए, जिससे स्वयं रोजगार के साधनों का विकास हो सके एवं गरीबी तथा बेरोजगारी की समस्या को कम किया जा सके।
4. औद्योगिक विकेन्द्रीकरण तथा परिवहन सुविधाओं के विकास के परिणाम स्वरूप नगर पर जनसंख्या के अतिरिक्त दबाव को कम किया जा सकता है।
5. प्राथमिक क्षेत्र को विकसित करने हेतु ग्रामीण स्तर पर उन्नत कृषि तथा पशुपालन को वरीयता प्रदान की जाये। जिससे व्यक्ति कृषि तथा पशुपालन से अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Chadda, A. (2016) : "An Outline of Sustainable Education in India", Yojana Magazine, January 2016.

Chandna, R.C. (2007) : "A Geography of Population", Kalyani Publication, Ludhiyana, p. 39-375.

Kiran (2010):"Information and Communication Technology in Indian Agriculture", International Journal of Biological Sciences and Engineering, Vol. 1, No. 1, p. 27-33.

Kumar, S. (2009): "Inter Regional and Inter District Disparaties in Agricultural Development : A

Study of Uttar Pradesh", Indian Journal of Regional Science, Vol. XXXXI, No. I, p. 22.

Kumar, Suresh (2016): "Role of Agro-Industries in Rural Employment – A Geographical Study of Block Joya", Shrinkhla Ek Shodhparak, Vaicharik Patrika, Vol. 3, No. 11, July 2016, p. 13-17.

Satya, Narayan, G. (2014) : "Rural Development and Poverty Alleviation in India : Policies and Programmes", Neha Publication, New Delhi.

Sharma, R.K. (2004) : "Demography and Population Problems", Altantic Publishers and Distributors, Nice Printing Press, New Delhi, p. 1-6.

Solanki, Arjun (2014) :"Migration from Rural Area – Causes and Result", Kurukshetra Magazine, Vol. 11, September 2014, p. 17.

Sunita, Sandhi and Sakshi Khurana (2017):"Changing Rural Environment and Digital Technology", Kurukshetra Magazine, Vol. 10, August-2017, p. 17-21.

Tripathi, A. (2017):"Educational Services and Level of Literacy of Bastinagar Shrinkhla Ek Shodhpark", Vaicharik, Patrika, Vol. 5, No. 2, Oct. 2017.